दीनदयाल और वर्तमान कृषि

*डॉ. अनिल कुमार,

असि. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए सिंचाई की उत्तम व्यवस्था, उर्वरक, भूस्वामी खेती, कृषि जोत का आकार, उचित कृषि उपज मूल्य पर अपने आर्थिक विचार दिए।

वर्तमान में कृषि के समक्ष कुछ समस्याएं है, जिनको दूर किये बिना कृषि का विकास नही कर सकते है। जैसे- सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर, छोटे छोटे भूमि, तकनीक की कमी, वित्त की समस्या, किसानों का दयनीय स्थिति, भंडारण की समस्या। दीनदयाल जी के विचारों को आत्मसात करके बहुत हद तक कृषि की समस्याएं दूर किया जा सकता है और कृषि का विकास किया जा सकता है।

Key words- **सिंचाई, उर्वरक, भूस्वामी खेती, कृषि जोत का आकार, कृषि उपज मूल्य, राष्ट्रीय आय, निर्यात, विपणन, भंडारण, आर्थिक विकास।**

एकात्म मानववाद-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का विचार दर्शन
'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है।
यह दर्शन मानव को एकात्म अथवा समग्र रूप में देखता है और उनके शाश्वत सुख और कल्याण की बात करता है। दीनदयाल जी का मानना था कि भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न पूंजीवाद सही है और न ही समाजवाद। हमारे देश के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा ही उपयुक्त है। यह विचारधारा कोई नयी विचारधारा नही है बल्कि हमारी सनातनी अर्थव्यवस्था की जो विशेषताएं थी, उसी का युगानुकूल रूप है। इस दर्शन का केंद्र बिंदु ही मानव है और मानव का सर्वांगीण विकास।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक विचार या विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है। दीनदयाल जी ने विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, विकेंद्रीकरण और अंत्योदय पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

दीनदयाल जी के कृषिगत आर्थिक विचार-

दीनदयाल जी कृषि के विकास के लिए मुख्य रूप से सिंचाई, उर्वरक, कृषि जोत के आकार, कृषि उपज मूल्य पर अपने बहुत ही महत्वपूर्ण विचार दिए, जो इस प्रकार है।

दीनदयाल जी मानना था कि कृषि विकास के लिए सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर न रहकर, सिंचाई की समुचित व्यवस्था अर्थात छोटी छोटी परियोजनाओं द्वारा सिंचाई की जानी चाहिए, जिससे अधिक से अधिक भूभाग सिंचित किया जा सके। दीनदयाल जी बड़े बड़े परियोजनाओं के पक्षधर नही थे।

उर्वरक के रूप में गोबर की खाद के प्रयोग की बात किए। बहुत जरूरी होने पर भी रासायनिक खाद के साथ भी गोबर की खाद मिलाकर ही प्रयोग करना चाहिए। यह विचार कहीं न कहीं जैविक खेती को ही बढ़ावा दे रही है।

दीनदयाल जी भू-स्वामी खेती की बात करते है अर्थात जो खेती कर रहा है वही जमीन का स्वामी है, मालिक है। जब किसान जमीन का स्वामी खुद को मानता है तो वह जमीन से सही तरीके से (माता और पुत्र की तरह) तभी जुड़ पाता है, जिससे भूमि का उर्वरा शक्ति का भी ध्यान रखता है और उत्पादन भी बढ़ता है।

दीनदयाल जी अधिकतम कृषि जोत आकार की बात करते है, जिससे कृषि में तकनीक का प्रयोग कर देश में अधिक से अधिक उत्पादन किया जा सके।

दीनदयाल जी अपने कृषिगत विचार में सबसे महत्वपूर्ण विचार कृषि उपज मूल्य पर दिए। उनका स्पष्ट मानना था कि किसानों को उनके उपज का उचित मूल्य जरूर मिलना चाहिए। दीनदयाल जी उचित कृषि उपज मूल्य की वकालत किये। कृषि उपज मूल्य के तहत उनका मानना था कि उचित कृषि उपज मूल्य दिए जाने से किसानों का आय बढ़ेगा, जीवन स्तर में सुधार होगा, जिससे वे लोग और अच्छे से कृषि कार्य करेंगे।
आय बढ़ने से किसान लोग औद्योगिक वस्तुओं का मांग करेंगे, जिससे उद्योगों का भी विकास होगा अर्थात उचित कृषि उपज मूल्य दिए जाने से अर्थव्यवस्था में एक साथ कृषि और उद्योगों का परस्पर विकास होगा।

दीनदयाल जी ने भारतीय कृषि के सर्वांगीण विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल दिए। उन्होंने कहा कि कृषि को केवल एक उद्योग के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसे एक जीवनशैली के रूप में अपनाया जाना चाहिए और साथ ही कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों और संसाधनों का उपयोग भी करना चाहिए। देश के लोगों के खुशहाली के लिए, अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि का विकास करना बहुत जरूरी है।

वर्तमान कृषि-

किसी भी देश के आर्थिक विकास में कृषि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अपना एक अलग ही स्थान है। भारत की लगभग 50-55% आबादी आज भी आजीविका हेतु कृषि पर निर्भर है। देश के राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान लगभग 14-16% है।
देश के कुल निर्यात में कृषि निर्यात का योगदान 2015-16 में लगभग 12-13% था।
उपरोक्त बातों से स्पष्ट है कि कृषि का विकास किसी भी देश के लिए बहुत जरूरी है।

वर्तमान भारतीय कृषि की अपनी कुछ समस्याएं है, जिन्हें दूर किये बिना कृषि का विकास संभव नही है। जैसे- सिंचाई हेतु मानसून पर अत्यधिक निर्भरता, छोटी और खंडित जोत, आधुनिक तकनीक की कमी, वित्त की कमी, मृदा क्षरण, जलवायु परिवर्तन, विपणन और भंडारण सुविधाओं के अभाव जैसी बहुत गंभीर समस्याओं से जूझ रही है, जिससे उत्पादकता घटती है और किसानों की आय प्रभावित होती है।

तुलनात्मक अध्ययन-

दीनदयाल जी के द्वारा दिये गए कृषिगत विचार और वर्तमान कृषि के समस्याओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो हम यह पाते है कि दीनदयाल जी के विचारों जैसे सिंचाई के छोटे छोटे परियोजनाओं के द्वारा कृषि की सिंचाई की समस्या, अधिकतम जोत का निर्धारण करके छोटे व खंडित भूमि की समस्या, उचित कृषि उपज मूल्य देकर किसानों के आय में कमी की समस्या को दूर किया जा सकता है। दीनदयाल जी कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक और संसाधनों के उपयोग पर भी जोर देते है।

निष्कर्ष-

दीनदयाल जी के कृषिगत विचारों और वर्तमान कृषि की समस्याओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है दीनदयाल जी विचारों को अपनाकर बहुत हद तक कृषि के समस्याओं को दूर किया जा सकता है और कृषि का विकास भी किया जा सकता है।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. लाल, एस. के. और एस. एन. लाल.(2016). भारतीय अर्थव्यवस्था: सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

11. दत्त एवं सुंदरम.(2015). भारतीय अर्थव्यवस्था. एस. चांद पब्लिशर.

12. कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका.